

## जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका

नवीन कुमार\*

\* सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान) राजकीय महाविद्यालय, मावली, उदयपुर (राज.) भारत

**शोध सारांश** – जनमत किसी भी देश की लोकतांत्रिक समाज की एक आधारभूत शक्ति है, जो सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक निर्णयों को प्रभावित करती है। जनमत निर्माण की प्रक्रिया में संचार साधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जनमत निर्माण में संचार साधन जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया समाज में सूचना के प्रसार, विचारों अनुभव के आदान-प्रदान तथा जागरूकता बढ़ाने का कार्य करते हैं। इनके माध्यम से नागरिक विभिन्न मुद्दों, नीतियों और घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और उसी आधार पर अपनी राय या मत का निर्माण करते हैं। आधुनिक समय में जनसंचार माध्यम जनमत को प्रभावित करने का एक प्रभावशाली साधन बन गए हैं। संचय के साधन न केवल सूचनाओं का प्रसारण करता है, बल्कि वह मुद्दों को प्रस्तुत करने, उनके महत्व को निर्धारित करने तथा लोगों की सोच को दिशा देने का कार्य भी करता है। जनसंचार के माध्यम विशेष रूप से चुनाव, सामाजिक आंदोलनों और सार्वजनिक नीतियों के संदर्भ में संचार साधनों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को और अधिक तेज तथा व्यापक बना दिया है, जिससे आम नागरिक भी अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। इस तरह संचार के साधन समाज में जागरूकता फैलाने, विचारों के निर्माण और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्रभावी और जिम्मेदार संचार माध्यम जनमत निर्माण की प्रक्रिया को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

**शब्द कुंजी** – जनमत, संचार, मीडिया, सोशल मीडिया।

**प्रस्तावना** – लोकतांत्रिक समाज में जनमत का अत्यंत महत्वपूर्ण आधारभूत स्थान होता है। जनसंचार माध्यम समाज में सूचना प्रसारित करके जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (कुमार, 2010, पृ. 112)। जनमत वह सामूहिक विचार या दृष्टिकोण है जो समाज के लोग किसी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक मुद्दे के बारे में व्यक्त करते हैं। किसी भी देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार की नीतियाँ और निर्णय काफी हद तक जनमत से प्रभावित होते हैं। इसलिए जनमत का निर्माण एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में संचार साधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। जनमत निर्माण में संचार साधन जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाने के प्रमुख माध्यम हैं। ये जनमत के माध्यम समाज के विभिन्न वर्गों तक जानकारी पहुँचाकर उन्हें विभिन्न मुद्दों के बारे में जागरूक बनाते हैं। जब लोग किसी विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त करते हैं, तो वे उस विषय के बारे में सोचते हैं, चर्चा करते हैं और अंततः अपनी राय बनाते हैं। इस प्रकार संचार साधन जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मीडिया के माध्यम से राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर लोगों की सोच प्रभावित होती है (सिंह, 2016, पृ. 85)। वर्तमान समय में तकनीकी विकास के कारण संचार माध्यमों का प्रभाव और भी अधिक बढ़ गया है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ बहुत तेजी से लोगों तक पहुँचती हैं। इससे समाज में किसी भी मुद्दे पर जनमत तेजी से बनता और बदलता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक समाज में संचार साधन जनमत निर्माण के प्रमुख आधार बन गए हैं। जनमत का अभिप्राय किसी समाज या

समुदाय के लोगों की सामूहिक राय से होता है। जब समाज के अधिकांश लोग किसी मुद्दे पर समान या मिलती-जुलती राय रखते हैं, तो उसे जनमत कहा जाता है। जनमत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या सांस्कृतिक किसी भी विषय से संबंधित हो सकता है। जनमत का निर्माण एकाएक नहीं होता, बल्कि यह धीरे-धीरे सूचना, अनुभव और विचार-विमर्श के माध्यम से विकसित होता है। इस पूरी प्रक्रिया में संचार साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधुनिक समाज में मीडिया जनमत निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम बन गया है (पचौरी, 2012, पृ. 143)।

**समस्या का कथन** – आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में संचार साधनों का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। जनमत निर्माण में संचार साधन समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे माध्यम लोगों को विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करते हैं। इन माध्यमों के माध्यम से लोग सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और उसी के आधार पर अपनी राय बनाते हैं।

प्रायः यह भी देखा गया है कि कई बार मीडिया द्वारा प्रस्तुत जानकारी लोगों के विचारों और दृष्टिकोण को अत्यधिक प्रभावित करती है। कभी-कभी गलत सूचनाएँ या पक्षपाती समाचार भी जनमत को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि यह अध्ययन किया जाए कि संचार साधन किस प्रकार जनमत निर्माण को प्रभावित करते हैं और समाज में उनकी यथार्थ भूमिका क्या है।

**अध्ययन के उद्देश्य:**

1. जनमत निर्माण की प्रक्रिया में संचार साधनों की भूमिका का

विश्लेषणात्मक करना।

2. समाज में जागरूकता फैलाने में मीडिया के महत्व का अध्ययन करना।
3. डिजिटल और सोशल मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट करना।
5. यह समझना कि संचार माध्यम किस प्रकार लोगों के विचारों और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

#### अध्ययन की परिकल्पना:

1. संचार साधनों का जनमत निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
2. समाचार पत्र, टेलीविजन और इंटरनेट लोगों की राय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. मीडिया के माध्यम से सूचना का प्रसार जनजागरूकता को बढ़ाता है।
4. सोशल मीडिया के विकास से जनमत निर्माण की प्रक्रिया अधिक तेज और व्यापक हो गई है।
5. संचार साधन लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायक होते हैं।
6. मीडिया के द्वारा प्रस्तुत जानकारी लोगों के विचारों और निर्णयों को प्रभावित करती है।

**शोध पद्धति** – इस अध्ययन में मुख्य रूप से वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक शोध पर आधारित है, जिसमें जनमत और संचार साधनों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के लिए मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जैसे पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ, इंटरनेट स्रोत इत्यादि। संचार साधनों की भूमिका को समझने के लिए उपलब्ध साहित्य और शोध अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है।

**जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका** – जनमत निर्माण की प्रक्रिया में संचार साधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। संचार साधन समाज में सूचना के प्रसार, विचारों के आदान-प्रदान और जागरूकता पैदा करने का कार्य करते हैं। इनके माध्यम से लोग विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और उसी आधार पर अपनी राय बनाते हैं। इस प्रकार संचार साधन समाज में जनमत को प्रभावित करने और उसे दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संचार प्रक्रिया के माध्यम से विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, जिससे सामाजिक जागरूकता बढ़ती है (द्विवेदी, 2017, पृ. 91)।

**1. सूचना का व्यापक प्रसार** – संचार साधनों का सबसे प्रमुख कार्य समाज में सूचनाओं का प्रसार करना है। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट लोगों तक देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी पहुँचाते हैं। जब लोगों को किसी घटना या मुद्दे के बारे में जानकारी मिलती है, तब वे उस विषय पर विचार करते हैं और धीरे-धीरे अपनी राय बनाते हैं। इस प्रकार सूचना का प्रसार जनमत निर्माण की पहली और महत्वपूर्ण अवस्था होती है।

**2. जनजागरूकता उत्पन्न करना** – संचार माध्यम समाज में विभिन्न समस्याओं और मुद्दों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाता है। जब किसी मुद्दे पर मीडिया लगातार चर्चा करता है, तो लोग उस विषय के महत्व को समझने लगते हैं और उस पर अपनी राय बनाते हैं।

**3. विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना** – संचार साधन समाज

में विचारों, अनुभव के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करते हैं। समाचार पत्रों के संपादकीय, टीवी बहस, रेडियो कार्यक्रम और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोगों को अपने विचार व्यक्त करने और दूसरों के विचारों को समझने का अवसर देते हैं। इससे समाज में संवाद की प्रक्रिया विकसित होती है और जनमत का निर्माण होता है।

**4. विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करना** – मीडिया किसी भी मुद्दे को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करता है। इससे लोगों को उस विषय को अलग-अलग दृष्टि से समझने का अवसर मिलता है। जब लोग विभिन्न विचारों को सुनते और समझते हैं, तो वे अपने विचारों को अधिक संतुलित और तर्कसंगत बना सकते हैं। इस प्रकार मीडिया लोगों को स्वतंत्र रूप से सोचने और सही निर्णय लेने में सहायता करता है।

**5. सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करना** – संचार माध्यम समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, जातीय भेदभाव और लैंगिक असमानता के विरुद्ध मीडिया के माध्यम से जनजागरूकता फैलाई जाती है। इससे लोगों की सोच में परिवर्तन आता है और समाज में सुधार की प्रक्रिया को गति मिलती है।

**6. लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाना** – लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया को चौथा स्तंभ माना जाता है। मीडिया सरकार की नीतियों, योजनाओं और कार्यों की जानकारी जनता तक पहुँचाता है और साथ ही जनता की समस्याओं और विचारों को सरकार तक पहुँचाने का कार्य भी करता है। इस प्रकार मीडिया सरकार और जनता के बीच एक सेतु का कार्य करता है और लोकतंत्र को मजबूत बनाता है।

**7. एजेंडा निर्धारण** – मीडिया यह तय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि समाज किन मुद्दों पर अधिक ध्यान देगा। जब मीडिया किसी मुद्दे को अधिक महत्व देता है, तो वह मुद्दा समाज में चर्चा का विषय बन जाता है। इसे एजेंडा निर्धारण कहा जाता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से मीडिया जनमत को प्रभावित कर सकता है।

**8. डिजिटल और सोशल मीडिया का प्रभाव** – आधुनिक समय में सोशल मीडिया ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को और अधिक तेज बना दिया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म लोगों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। इन माध्यमों के द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने विचार बहुत कम समय में हजारों या लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है। इससे जनमत निर्माण की प्रक्रिया अधिक व्यापक और प्रभावशाली हो गई है।

**9. जनमत को दिशा देना** – मीडिया केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह लोगों के विचारों को प्रभावित करके जनमत को एक विशेष दिशा भी दे सकता है। समाचारों की प्रस्तुति, विश्लेषण और बहस के माध्यम से मीडिया किसी मुद्दे के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

**सैद्धांतिक ढाँचा** – जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका को समझने के लिए विभिन्न संचार सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है।

**1. एजेंडा सेटिंग सिद्धांत** – इस सिद्धांत के अनुसार मीडिया यह निर्धारित करता है कि समाज किन मुद्दों पर अधिक ध्यान देगा। जब मीडिया किसी विषय को अधिक महत्व देता है, तो वह विषय समाज में चर्चा का प्रमुख मुद्दा बन जाता है।

**2. दो-चरणीय प्रवाह सिद्धांत** – इस सिद्धांत के अनुसार मीडिया की

जानकारी पहले कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों तक पहुँचती है, जिन्हें मत नेता कहा जाता है। इसके बाद ये मत नेता अन्य लोगों को प्रभावित करते हैं।

**3. उपयोग और संतुष्टि सिद्धांत** – इस सिद्धांत के अनुसार लोग अपनी आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर विभिन्न मीडिया का उपयोग करते हैं। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि लोग मीडिया से किस प्रकार की जानकारी प्राप्त करते हैं और वह उनके विचारों को कैसे प्रभावित करती है (Severin & Tankard, 2014)।

**अध्ययन का महत्व** – यह अध्ययन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

1. यह अध्ययन जनमत की अवधारणा को स्पष्ट करने में सहायता करता है।
2. यह संचार साधनों की सामाजिक और राजनीतिक भूमिका को समझने में मदद करता है।
3. इस अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि मीडिया किस प्रकार लोगों की सोच और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।
4. यह अध्ययन लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया के महत्व को स्पष्ट करता है।
5. यह अध्ययन डिजिटल और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव को समझने में भी सहायक है।

इस प्रकार यह अध्ययन समाज, मीडिया और लोकतंत्र के बीच संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

**अध्ययन की सीमाएँ** – यह अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

1. इस अध्ययन में केवल जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
2. अध्ययन में सीमित समय और संसाधनों के कारण सभी पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण संभव नहीं हो पाया है।
3. यह अध्ययन सामान्य रूप से मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करता है, इसलिए इसके निष्कर्ष सभी परिस्थितियों में समान रूप से लागू नहीं हो सकते।

**निष्कर्ष** – अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। संचार माध्यम समाज में सूचना का व्यापक प्रसार करते हैं, लोगों में जागरूकता उत्पन्न करते हैं, विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं और सामाजिक परिवर्तन में योगदान देते हैं। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट जैसे पारंपरिक माध्यमों के साथ-साथ सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को और भी तेज और व्यापक बना दिया है। इन माध्यमों के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने विचार और अनुभव बहुत कम समय में बड़े समाज तक पहुँचा सकता है।

जनमत निर्माण में संचार साधनों की भूमिका केवल सूचना देने तक सीमित नहीं है। ये माध्यम लोकतंत्र को मजबूत बनाने, सरकार और जनता के बीच सेतु स्थापित करने, एजेंडा सेटिंग और सामाजिक सुधार में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। मीडिया द्वारा प्रस्तुत जानकारी लोगों के दृष्टिकोण, सोच और व्यवहार को प्रभावित करती है, जिससे जनमत के निर्माण की प्रक्रिया सक्रिय और गतिशील बनती है।

हालांकि, इस प्रक्रिया के साथ-साथ फेक न्यूज, पक्षपातपूर्ण समाचार और गलत सूचना का खतरा भी बढ़ गया है। इसलिए यह आवश्यक है कि

संचार साधनों का उपयोग जिम्मेदारी, निष्पक्षता और तर्कसंगत दृष्टिकोण के साथ किया जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि संचार साधन जनमत निर्माण की रीढ़ हैं। जब ये माध्यम सही, निष्पक्ष और तथ्यपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं, तो समाज में संतुलित, जागरूक और समृद्ध जनमत का निर्माण होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती और समाज की प्रगति के लिए संचार माध्यमों की भूमिका अनिवार्य और अपरिहार्य है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. कुमार, के. जे. (2010). 'जनसंचार के सिद्धांत और व्यवहार' नई दिल्ली. जयको पब्लिशिंग हाउस।
2. सिंह, बी. एन. (2016). 'जनसंचार: सिद्धांत और अनुप्रयोग' नई दिल्ली. रावत पब्लिकेशन।
3. पचौरी, सुधीश. (2012). 'मीडिया विमर्श' नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन।
4. पांडेय, आर. के. (2018). 'जनसंचार माध्यम और समाज' नई दिल्ली. ग्रंथ शिल्पी।
5. मिश्रा, के. के. (2015). 'जनमत और जनसंचार' नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान।
6. जोशी, पी. सी. (2013). 'मीडिया और समाज' नई दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन।
7. वर्मा, वी. पी. (2014). 'राजनीति विज्ञान के सिद्धांत' नई दिल्ली लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
8. शर्मा, आर. एन. (2011). 'जनमत और लोकतंत्र' जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. द्विवेदी, ए. पी. (2017). 'संचार और विकास' नई दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
10. त्रिपाठी, एस. (2019). 'जनसंचार और लोकतांत्रिक प्रक्रिया' नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन इंडिया।
11. अग्रवाल, वी. बी., - गुप्ता, वी. एस. (2010) 'हैंडबुक ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन' नई दिल्ली कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
12. यादव, एस. के. (2018). 'मीडिया अध्ययन' नई दिल्ली पीयरसन इंडिया।
13. श्रीवास्तव, एच. के. (2014). 'जनसंचार और सामाजिक परिवर्तन' वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
14. चतुर्वेदी, ए. (2016). 'जनमत और राजनीतिक संचार' नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन।
15. तिवारी, आर. के. (2013). 'भारतीय पत्रकारिता का इतिहास' नई दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
16. शुक्ल, एस. पी. (2012). 'मीडिया और जनमत' नई दिल्ली अटलांटिक पब्लिशर्स।
17. सिंह, आर. पी. (2017). 'जनसंचार माध्यम और लोकतंत्र' नई दिल्ली रावत पब्लिकेशन।
18. पाठक, वी. (2015). 'संचार सिद्धांत' जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
19. गुप्ता, एम. एल. (2011). 'मीडिया प्रबंधन' नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान।
20. जैन, पी. (2019). 'जनसंचार और समाजशास्त्र' नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन इंडिया।